आदिवासी स्त्री : अस्मिता का प्रश्न

डॉ0 अपर्णा पाण्डेय

आदिवासी शब्द सुनते ही, मस्तिष्क में एक छवि उभरती है, असभ्य, अनपढ़, गॅवार व्यक्ति की, जो तथाकथित सभ्य समाज का हिस्सा बनने योग्य नहीं है। यह अवधारणा सामान्यतया पूरे आदिवासी समाज के लिए है। एक तो वैसे ही सम्पूर्ण स्त्री जाति अपनी अस्मिता, अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रतिरोध कर रही है, संघर्ष कर रही है, उसमें यदि आदिवासी स्त्री की स्थिति की बात करुं, तो यह संघर्ष दोहरा हो जाता है। कई मायनों में आदिवासी समाज अशिक्षित या अल्पशिक्षित होते हुए भी, सभ्य, शिक्षित समाज से ज्यादा उन्नत है, क्योंकि वहां कन्या भ्रुण हत्या नहीं की जाती, बल्कि कन्या जन्म उनके लिए समृद्धि का द्योतक होता है, वो चाहती है कि उनकी पहली संतान कन्या ही हो, ताकि वो आने वाले समय में अपनी माँ का ख्याल रखे व उसके बाद आने वाले भाई–बहनों के पालन–पोषण में भी माँ का सहयोग करे। कारण चाहे जो भी हो लेकिन इस पक्ष में तो वे सुशिक्षित, सभ्य सभा से उन्नत हुए ही।